ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(9): 863-865
www.allresearchjournal.com
Received: 17-06-2016
Accepted: 20-08-2016

डॉ. वीरेंद्र कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत

Correspondence Author:
डॉ. वीरेंद्र कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत

आपका बंटी: तस्वीर का पहलू दूसरा भी है

डॉ. वीरेंद्र कुमार

शोध का सार तत्त्व

मन्नू भंडारी द्वारा रचित "आपका बंटी" उपन्यास पहली बार ***1971*** में आया था। इस उपन्यास के केंद्र में संतान अर्थात बंटी है। पति और पत्नी में बहुत से कारणों से आपस में निभाव नहीं हो पाता तो उपन्यासकार ने पति पत्नी के आपस में निभाव ने होने के कारण बच्चे पर कैसा प्रभाव पड़ता है इसका यथार्थ चित्रण किया है। उपन्यासकार ने पति द्वारा परित्यक्त होने पर पत्नी द्वारा किसी अन्य को पति के रूप में अपनाकर जीवन जीने का रास्ता सुझाया है। यह सही भी है कि पति अगर पत्नी को छोड़ सकता है तो पत्नी का भी अपना व्यक्तित्व है वह उसे छोड़कर अन्य पुरुष को पति के रूप में क्यों नहीं अपना सकती***?***

इस उपन्यास में बच्चे पर पड़ने वाले प्रभाव को विशेष रूप से दिखाया गया है। इस संबंध में तस्वीर के और भी आयाम खुलते हैं। पहली बात तो यह है कि पति अथवा पत्नी बन जाने के बाद ही दोनों का वास्तविक रूप कुछ समय बाद निकल कर आता है और दिखावा करते हुए कुछ सच्चाई दोनों की छिपी रहती है और दूसरी बात यह है जब वे सच्चाई को समझ लेते हैं तो काफी देर भी हो जाती है। इसी देरी में संतान का जन्म हो जाना एक ऐसी घटना है जिससे काफी उथल-पुथल स्वाभाविक रूप में उपस्थित हो जाती है। कुछ सीमाओं तक दोनों साथ साथ रह लेते हैं , किंतु जहां पत्नी और पति आपसी रिश्ते के अर्थ को बिल्कुल खो दें और एक नीरस उस जिंदगी को इसलिए ढोएं क्योंकि बंटी जैसा बच्चा संतान के रूप में प्राप्त हो गया है तो प्रश्न खड़ा हो जाता है। दुनिया में अनेक उदाहरण हैं जहां कहीं पति-पत्नी का हत्यारा बन जाता है तो कहीं पत्नी पति को रास्ते से हटाने में षड्यंत्र रचती हैं।

मन्नू भंडारी का आपका बंटी उपन्यास ***1971*** में आया था। ***1971*** के बाद पति-पत्नी के रिश्तों के अनेक स्वरूपों को ध्यान में रखते हुए बदलाव आए हैं। घरेलू हिंसा का कानून, दहेज प्रताड़ना का कानून, और नारी का पुरुष की संपत्ति में अधिकार जैसा कानून आये हैं। इन परिस्थितियों में चीजें बदल रही हैं। ऐसे में बंटी जैसों बच्चों के सवाल पीछे छूट रहे हैं। पति पत्नी के अहं की टकराहट ,एक दूसरे को छोटा दिखाने और नीचा दिखाने की भावना, एक दूसरे को जेल भेजने और सजा दिलाने की भावना एक दूसरे के परिवारों को झूठे केस में फंसाने की भावना और खुद दुखी होते हुए दूसरों को भी दुखी या संकट से नहीं निकल देने की कोशिश में बंटी जैसे बच्चों के सवाल पीछे छूट जाते हैं और इसके साथ ही ऐसे बूढ़े अशक्त माता पिता जिनका एकमात्र विवाहित पुत्र अथवा एकमात्र विवाहित बेटी होती है बच्चों की तरह असहाय दिखाई देते हैं। कोर्ट में लाखों केस लंबित पड़े हैं, सालों से चल रहे हैं, कहीं पत्नी फैसला नहीं लेने देती तो कहीं पति तलाक लेने में अड़चन डालते हैं। संतान और बूढ़े माता-पिता की किसी को चिंता नहीं है।

कोई विवाहित पुरुष अथवा विवाहिता स्त्री कमाने योग्य बनती है तो उसे खड़ा करने में किसी पिता या मां का कितना पैसा समय और परिश्रम लगता है इसकी कल्पना सहज नहीं है। कहीं कर्ज लेकर एकमात्र संतान को योग्य बनाया जाता है और कहीं कर्ज को चुकाते चुकाते बूढे मां-बाप स्वयं चुक जाते हैं कहीं मुश्किल से एक या डेढ़ कमरे का स्वामी अपने बच्चों को बना पाते हैं तो वृद्ध माता-पिता तलाक चाहने वाली नारी को कैसे हिस्सा बांट कर दें और स्वयं कहां आश्रम में शरण लेने जाएं यह स्थिति बड़ी विचित्र है

इस उपन्यास में बंटी की समस्या को केंद्र में रखा गया है। परिवार और अजय बत्रा का परिवार उपन्यास में अनुपस्थित रहता है। इसलिए इस समस्या के कई आयामों की तस्वीर पूरे विस्तार में नहीं खुलती है क्योंकि शकुन भी कभी बंटी अथवा छोटा बालक रही होगी जिसे परिवार के किसी व्यक्ति ने पाला पोषा होगा और अजय भी कभी बालक रहा होगा जो परिवार के द्वारा बड़ा और योग्य बनाया गया होगा। इसलिए इस समस्या का विस्तार अनेक जटिलताओं में उलझता हुआ अनेक प्रश्न खड़ा करता है। उपन्यास में विस्तार और उलझन से बचकर स्त्री और पुरुष के बीच में आने वाली अहम की समस्या को तलाक का कारण माना है कानून की दृष्टि से केवल अहम के टकराव के कारण तलाक नहीं मिलता है और कुछ आधारों पर ही तलाक दिया जाता है।

उपन्यास में बंटी अपनी मां के पास रहता हुआ सहज होता है, वही जन्मा और पलकर बड़ा होता है। कभी-कभी पापा उससे मिलने आते हैं। काल क्रम में उसे ज्ञात होता है की उसके मम्मी और पापा की कुट्टी हो गई है " टीटू उसे कहता है तेरी मम्मी पापा में तलाक जो हो गया है। ना चाहते हुए भी बंटी पूछ बैठा तलाक? तलाक क्या होता है?

तू नहीं जानता? बुद्धू कहीं का। मम्मी पापा की जो लड़ाई होती है ना उसे तलाक कहते हैं।" [1].

उपन्यास में बंटी को शकुन से भरपूर प्यार मिलता है, "टीटू को दिखाते हुए बंटी मम्मी के गले से झूम गया लो देख लो मम्मी कैसा दुलार करती है मेरा तुम झूमो तो जरा अपनी अम्मा के गले में। न झटक कर अलग कर दें। न रहें पापा उनके पास उससे क्या? मम्मी अकेली कितना प्यार करती हैं उसे.....।"[2]

लेकिन अजय बत्रा किसी और से शादी कर लेते हैं और उससे संतान भी प्राप्त होने की स्थिति जब शकुन को पता लगती है तो वह भी डॉक्टर जोशी की पत्नी बन जाने में कुशल समझती है जिनके अमी और जोत दो बच्चे हैं। लेखिका ने जोशी के घर रहकर शकुन को तो सहज रूप में दिखाया है किंतु बंटी मम्मी को जोशी के साहचर्य में देखकर अपने को असहज रूप में पाता है । अमी और जोत को भी अपने साथ नहीं मिला पाता। अपने खिलौने दूसरे के हाथ में देखकर बंटी दुखी होता है। राजा रानी की कहानी सुना कर सुलाने वाली उसकी मां शकुन डॉक्टर जोशी के कमरे में सोने जाती हैं तो वह अपने को संयत नहीं कर पाता। अब उसमें डर दुख और गुस्सा पैदा होने लगा, वह अलग सोते समय बहुत जोर से डर जाता है "मम्मी दरवाजा खोलो मम्मी सारी ताकत से बंटी चीख रहा है और दोनों हाथों से दरवाजा भड़भड़ा रहा है। [3]"

इस स्थिति के बाद वह कल्पना करता है कि पापा के पास अवश्य जाएगा क्योंकि उसके पापा बहुत अच्छे हैं उसे प्यार करते हैं लेकिन जब वह जब बत्रा के घर जाता है तो उसके सामने एक उनकी नई तस्वीर दिखाई देती है। पापा अपने पास बिठाकर पूछ रहे हैं "एक बात कहें बेटा मानोगे?" बंटी नजरें पापा के चेहरे पर टिका देता है।
" तुम मीरा को क्या कहते हो?" बंटी चुप
"मम्मी कहोगे?"
" बंटी डॉक्टर साहब को पापा कहा कर बेटे" और तड़ाक से दिया हुआ अपना जवाब ही कानों में गूंज गया
"मेरे पापा तो कलकत्ते में हैं"
पर अब? जैसे कोई जवाब ही नहीं सूझ रहा है। वह सिर्फ पापा की ओर देखता रहता है। [4]

दिन किसी तरह से निकल जाता है लेकिन रात्रि शयन में बंटी को बड़ी कठिनाइयां पापा के घर में होती हैं। उपन्यास में एक स्थान पर लिखा है
"अकेले में डरोगे तो नहीं? सो जाओगे न ?" बंटी का मन हो रहा है कि कह दे वह बहुत बहुत डरेगा। इस घर में तो मैं अकेला सो ही नहीं सकता। वहां तो अमी और जोत थे। यहां तो वह सारे दिन भी एक तरह से डरता ही रहा है। [5]"

लेकिन ऐसी स्थिति फिर से मम्मी के पास जाने के लिए कह नहीं सकता क्योंकि वही से जिद करके तो वह पापा के पास आया है पर सच्चाई सामने आते ही वह डरने लगा और चुप रहने लगा। और रात को सोते समय उसका बिस्तर में ही पेशाब निकल जाता है "बंद आंखों से ही बंटी सुन रहा है और भीतर ही भीतर सिकुड़ा चला जा रहा है, शर्म से ,डर से, दुख से.

अरे यह क्या पिस्सी कर दी"। [6]

उपन्यासकार ने बंटी जैसे बच्चों की परिस्थितियों का मार्मिक अंकन किया है और स्वयं महिला होने के नाते वे सफल सिद्ध हुई हैं और उन्होंने पति पत्नी युगलों के लिए एक संदेश भी दिया है कि जहां तक संभव है बंटी को ध्यान में रखकर संबंधों को जियें

तलाक की स्थितियां ना पैदा होने दें लेकिन इसके साथ ही कुछ प्रश्न अनुत्तरित रह जाते हैं.

जर्जर तथा मृत प्राय संबंधों को जीना क्या जीना है? क्या पुरुष और स्त्री के स्वयं के जीवन का कोई अस्तित्व होगा? क्या विवाहिता बेटी अथवा विवाहित पुत्र तलाक जैसी यंत्रणा दायी स्थिति के लिए अपने बुजुर्गों को यातना दिलाते रहेंगे? अथवा बुढ़ापे का सहारा बन पाएंगे??

संदर्भ - ग्रंथ - सूची

1. आपका बंटी: मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, पहला संस्करण 1971, सत्रवान संस्करण 2000
2. आपका बंटी- मन्नू भंडारी पृ. 17
3. आपका बंटी- मन्नू भंडारी पृ. 19
4. आपका बंटी- मन्नू भंडारी पृ. 135
5. आपका बंटी- मन्नू भंडारी पृ. 201
6. आपका बंटी- मन्नू भंडारी पृ. 200
7. आपका बंटी- मन्नू भंडारी पृ. 201
8. एक दुनिया समानांतर - राजेंद्र यादव